REVIEW OF RESEARCH
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF) UGC APPROVED JOURNAL NO. 48514 ISSN: 2249-894X
VOLUME - 8 | ISSUE - 7 | APRIL - 2019

उत्तराखण्ड की शैक्षणिक संस्थाओं का अध्ययन

देवेन्द्र सिंह चम्याल[1], डॉ भीमा मनराल[2]
[1]एम० एस–सी० रसायन विज्ञान, एम० ए० गणित, एम० ए० इतिहास, एम० एड० (गोल्ड मैडलिस्ट), नेट (शिक्षाशास्त्र), शोध छात्र, शिक्षा संकाय, एस० एस० जे० परिसर, अल्मोड़ा, कुमाऊँ वि० वि० नैनीताल।
[2]प्रोफेसर, शिक्षा संकाय, एस० एस० जे० परिसर, अल्मोड़ा, कुमाऊँ वि० वि० नैनीताल।

सारांश–

इस शोधकार्य में उत्तराखण्ड के शैक्षणिक संस्थाओं की स्थिति एवं उनका योगदान का अध्ययन किया गया है। वर्तमान में उत्तराखण्ड की कुल जनसंख्या–10116752, जनसंख्या घनत्व–189, लिंगानुपात–963 तथा साक्षरता दर– 79.63 है। गत एक दशक में पलायन के बाद भी राज्य की जनसंख्या लगभग 16 लाख बड़ी है। हर वर्ष लगभग डेढ़ लाख लोग उत्तराखण्ड में बड़े है। राज्य में जनसंख्या वृद्धि के बाद भी अल्मोड़ा और पौड़ी जनपदों में गत एक दशक में जनसंख्या में दस–दस हजार की कमी आई है। साक्षरता की दृष्टि से देखें तो देहरादून 85.24 प्रतिशत के साथ प्रथम स्थान पर हैं पुरूषों की साक्षरता के मामले में पढ़ा लिखा माना जाने वाले देहरादून को रूद्रप्रयाग ने पीछे छोड़ दिया है। रूद्रप्रयाग में सबसे ज्यादा 94.97 प्रतिशत पुरूष पढ़े लिखे हैं। देहरादून जनपद में सर्वाधिक 79.61 प्रतिशत महिलायें पढ़ी लिखी है। उधमसिंहनगर की साक्षरता प्रतिशत 74.44 प्रतिशत की दृष्टि से सबसे पिछड़ा हुआ है। उत्तराखण्ड में वर्तमान समय में 78 तहसीलें हैं। उत्त्राखण्ड की जनसंख्या भारत की जनसंख्या का 0.84 प्रतिशत है तथा क्षेत्रफल की दृष्टि से उत्त्राखण्ड का क्षेत्रफल 1.69 प्रतिशत है। साक्षरता दर के मामले में देश में उत्तराखण्ड 17वें तथा जनसंख्या के मामले में 20वें स्थान पर है। वर्ष 2011 की जनसंख्या के अनुसार उत्तराखण्ड में सर्वाधिक जनसंख्या वाला जनपद हरिद्वार 19.37 लाख हैं। तथा सबसे कम जनसंख्या वाला जनपद रूद्रप्रयाग 2.36 लाख हैं। सर्वाधिक जनसंख्या घनत्व वाला जनपद हरिद्वार 817 तथा न्यूनतम जनसंख्या घनत्व वाला जनपद उत्तरकाशी 41 है। उत्तराखण्ड में पुरूष– महिला साक्षरता का अन्तर 17.63 प्रतिशत रह गया है।

मुख्य शब्द– उत्तराखण्ड, शैक्षणिक, संस्थान, शिक्षा ।

प्रस्तावना–

शिक्षा बालक का सर्वांगीण विकास कर उसे तेजस्वी, बुद्धिमान, चरित्रवान, विद्वान तथा वीर बनाती है। शिक्षा समाज की उन्नति के लिए भी आवश्यक तथा शक्तिशाली साधन है। **महात्मा गॉधी के अनुसार** – यदि मनुष्य सीखना चाहे तो उसकी हर एक भूल उसे कुछ शिक्षा दे सकती है,। शिक्षा मानव विकास का मूल साघन है। इसके द्वारा मनुष्य की जन्मजात शक्तियों का विकास उनके ज्ञान एवं कला कौशल में वृद्धि एवं व्यवहार में परिवर्तन किया जाता है और उसे सभ्य, सुसंस्कृत एवं योग्य नागरिक बनाया जाता है। और यह कार्य मनुष्य के जन्म से प्रारम्भ हो जाता है। बच्चे के जन्म के कुछ दिन बाद ही उसके माता– पिता एवं परिवार के अन्य सदस्य उसे सुनना और बोलना सिखाने लगते है। जब बच्चा कुछ बड़ा होता है तो उसे उठने– बैठने, चलने– फिरने, खाने– पीने तथा सामाजिक आचरण की विधियॉ सिखाई जाने लगती है। जब वह तीन चार वर्ष का

होता है तो उसे पढ़ना लिखना सिखाने लगते है। **एडीसन के अनुसार** – शिक्षा मनुष्य की आत्मा के लिए उसी भॉति है जिस प्रकार संगमरमर के लिए शिल्प–कला।

उत्तराखण्ड में ब्रिटिश काल में अनेक शिक्षण संस्थान खोले गये। जिनमें नैनीताल, मसूरी और देहरादून प्रमुख शिक्षा केन्द्र के रूप में सामने आये। यहॉ स्थापित विद्यालयों में सेंट जॉर्ज स्कूल मसूरी, वुड स्टाक स्कूल, मसूरी, शेरवुड कॉलेज, नैनीताल, सेंट जोसेफ स्कूल नैनीताल, ओक ग्रोव स्कूल मसूरी, दून स्कूल देहरादून जैसे विद्यालय शामिल थे। ये विद्यालय आज भी शिक्षा के क्षेत्र में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। 1847 में गंगनहर के कर्मियों को प्रशिक्षण देने के लिए स्थापित रूड़की कॉलेज को 1854 में विस्तार देकर थॉमसन कॉलेज ऑफ सिविल इंजीनियरिंग का नाम दिया गया। आज यह कॉलेज भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान आई0 आई0 टी0 के नाम से इंजीनियरिंग शिक्षा के क्षेत्र में अग्रणी भूमिका निभा रहा है। स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद 17 नवम्बर 1960 को पंतनगर में भारत का पहला कृषि विश्वविद्यालय खुला। 1972 से इसे पं0 गोविंद बल्लभ पंत कृषि एवं प्रौघोगिकी विश्वविघालय कहा जाता है। 1973 में गढ़वाल और कुमाऊॅ विश्वविद्यालय की स्थापना हुई। गढ़वाल वि0 वि0 अब केन्द्रीय वि0 वि0 बन गया है। उत्तराखण्ड राज्य की स्थापना के बाद राज्य में शिक्षा के क्षेत्र में विशेष प्रयास किये गये, जो आज भी जारी हैं। राज्य सरकार ने शत–प्रतिशत साक्षरता का लक्ष्य निर्धारित किया है। भारत की जनगणना सन् 2011 के आंकड़ो के अनुसार उत्तराखण्ड में साक्षरता प्रतिशत 78.82 है, जो देश की कुल साक्षरता प्रतिशत 74.04 से 4.78 प्रतिशत अधिक है। उत्तराखण्ड में पुरूष साक्षरता 87.40 प्रतिशत है, जबकि महिला साक्षरता 70.00 प्रतिशत है। पुरूष साक्षरता के सापेक्ष महिला साक्षरता 17.40 प्रतिशत कम है। विद्यालयों की स्थिति, मार्च 2013 में, जूनियर बेसिक स्कूल 15945, सीनियर बेसिक स्कूल 4546, उच्चतर माध्यमिक/इण्टरमीडिएट 3222, महाविद्यालय 107 हैं।

शिक्षा का स्वरूप

विद्यालयी शिक्षा

भारत की जनगणना सन् 2011 के आंकड़ों के अनुसार उत्तराखण्ड में साक्षरता प्रतिशत 79.63 है, जो देश की कुल साक्षरता प्रतिशत 74.04 से अधिक है। देश में पुरूष साक्षरता 82.14 प्रतिशत है, जबकि उत्तराखण्ड में यह 88.33 प्रतिशत है। इसी प्रकार सम्पूर्ण देश में महिला साक्षरता दर 65.46 प्रतिशत है, जबकि उत्तराखण्ड में यह 70.70 प्रतिशत है। देश भर में पुरूष साक्षरता के सापेक्ष महिला साक्षरता 16.68 प्रतिशत कम हैं जबकि उत्तराखण्ड में पुरूष के सापेक्ष महिला साक्षरता 17.63 प्रतिशत कम है।

उत्तराखण्ड की विद्यालयी शिक्षा अधिनियम–2006 द्वारा संचालित की जाती है। इस अधिनियम के तहत उत्तराखण्ड में प्रारम्भिक और माध्यमिक शिक्षा कक्षा 1 से 12 तक के एकीकृत स्वरूप को स्वीकार किया गया है। विद्यालयी शिक्षा, उत्तराखण्ड के अन्तर्गत 30 सितम्बर 2010 के अनुसार 15644 प्राथमिक विद्यालय, 4295 उच्च प्राथमिक विद्यालय, 1099 हाईस्कूल एवं 1371 इण्टरमीडिएट विद्यालय संचालित किए जा रहे है। इन विद्यालयों में लगभग 23 लाख 1 से 5 तक, 11.08 लाख, कक्षा 6 से 8 तक 6.47 लाख, 9 से 10 तक 3.59 लाख तथा 11 एवं 12 में 1.98 लाख के लगभग है। विद्यालयी शिक्षा को मजबूत आधार प्रदान के लिए सर्वशिक्षा अभियान (एस0 एस0 ए0) के अन्तर्गत बालिकाओं की शिक्षा के लिए राष्ट्रीय कार्यक्रम एन0 पी0 ई0 जी0 ई0 एल0, कस्तूरबा गॉधी बालिका विद्यालय, विशिष्ट आवश्यकताओं वाले बच्चों के लिए समेकित शिक्षा आई0 ई0 डी0, शिक्षा गारण्टी केन्द्र ई0 जी0 एस0, कम्प्यूटर एडेड लर्निंग कार्यक्रम काल्प, स्काउट्स एवं गाइड्स तथा नवाचारी शिक्षा की गुणवत्ता संवर्द्धन हेतु भारत सरकार द्वारा संचालित जवाहर नवोदय विद्यालयों की ही तर्ज पर उत्तराखण्ड में राजीव गॉधी नवोदय विद्यालयों तथा श्यामा प्रसाद मुखर्जी अभिनव विद्यालयों की स्थापना की गई है। विशेषकर ग्रामीण क्षेत्र में निर्धन एवं प्रतिभावान बालक–बालिकाओं के हितार्थ इन विद्यालयों में लिखित परीक्षा के माध्यम से कक्षा 6 में प्रवेश प्रदान किया जाता है। चयन प्रक्रिया में कम से कम 75 प्रतिशत ग्रामीण बच्चों को शामिल करने की व्यवस्था है। इन विद्यालयों में निःशुल्क आवास एवं पाठ्य पुस्तकें प्रदान की जाती है। वर्तमान में राज्य के 8 जनपदों यथा– देहरादून, हरिद्वार, पौड़ी, नैनीताल, चम्पावत, पिथौरागढ़, अल्मोड़ा एवं टिहरी में राजीव गांधी नवोदय विद्यालय तथा 5 जनपदों यथा– रूद्रप्रयाग, उत्तरकाशी, चमोली, बागेश्वर एवं ऊधमसिंहनगर में श्यामा प्रसाद मुखर्जी अभिनव विद्यालयों की स्थापना की जा चुकी है। निर्धन अनुसूचित जाति

एवं जनजाति की बालिकायें शिक्षा प्राप्ति की ओर अग्रसर हों इसके लिए भारत सरकार द्वारा देश में शैक्षिक दृष्टि से अधिक पिछड़े विकास खण्डों में कस्तूरबा गाँधी आवासीय बालिका विद्यालयों का संचालन राज्य सरकारें करती है। इस योजना के तहत उत्तराखण्ड के 12 जनपदों में 26 कस्तूरबा गांधी आवासीय बालिका विद्यालय चल रहे हैं। इन विद्यालयों में बालिकाओं की आवासीय सुविधा के साथ कक्षा 6 से 8 तक की निःशुल्क शिक्षा प्रदान की जाती है। विद्यालयी शिक्षा के अन्तर्गत राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद एस0 सी0 ई0 आर0 टी0, नरेन्द्र नगरः राज्य शैक्षिक, प्रबन्धक एवं प्रशिक्षण संस्थान सीमेट, देहरादून, उत्तराखण्ड सभी के लिए माध्यमिक शिक्षा परिषद, देहरादून तथा उत्तराखण्ड विद्यालयी शिक्षा परिषद, रामनगर संचालित हैं। एस0 सी0 ई0 आर0 टी0, उत्तराखण्ड का गठन 17 जनवरी 2002 को किया गया। इसके द्वारा उत्तराखण्ड की विद्यालयी शिक्षा के लिए पाठ्यचर्या, पाठ्यक्रम, शिक्षण एवं प्रशिक्षण सामाग्री का विकास, अध्ययन शोध एवं प्रशिक्षण कार्यक्रमों का संचालन किया जाता है। सीमेट का गठन 29 सितम्बर 2005 को किया गया। शैक्षिक नीति व प्रबन्धन के क्षेत्र में नियोजकों, प्रशासकों, पर्यवेक्षकों एवं सहयोगी अभिकर्मियों का प्रशिक्षण, शोध एवं मूल्यांकन, सुझाव तथा प्रसार कार्यक्रमों का संचालन सीमेट द्वारा किया जाता है। उत्तराखण्ड विद्यालयी शिक्षा परिषद् रामनगर द्वारा प्रमुखतः हाईस्कूल एवं इण्टरमीडिएट परीक्षाओं का आयोजन किया जाता हैं। भारत सरकार द्वारा राष्ट्रीय माध्यमिक शिक्षा अभियान के संचालन हेतु उत्तराखण्ड सभी के लिए माध्यमिक शिक्षा परिषद् का गठन किया गया है। इसका मुख्य उद्देश्य विद्यालयी शिक्षा में केन्द्र सरकार तथा राज्य सरकार के द्वारा सहायतित राष्ट्रीय शिक्षा अभियान, सूचना प्रौद्योगिकी, तकनीकि शिक्षा विशिष्ट आवश्यकता के बच्चों की शिक्षा, बालिका शिक्षा आदि योजनाओं का संचालन तथा अनुश्रवण करना है। इस योजना में केन्द्र एवं राज्य सरकार का वित्तीय योगदान 11वीं पंचवर्षीय योजना में 75.25 तथा तत्पश्चात् 50.50 का है। इस परियोजना के कियान्वयन के लिए राज्य, जनपद तथा विकासखण्ड स्तर पर प्रशासनिक ढांचा गठित किया गया है। इसमें निदेशक, विद्यालयी शिक्षा, उत्तराखण्ड को पदेन राज्य परियोजना निदेशक नामित किया गया है। इसके अतिरिक्त विद्यालयी शिक्षा विभाग के अन्तर्गत राज्य साक्षरता मिशन प्राधिकरण, स्काउट्स एवं गाइड्स के कार्यक्रम भी संचालित किए जाते हैं।

राजीवगॉधी नवोदय विद्यालय– राज्य के ग्रामीण क्षेत्रों के प्रतिभाशाली बच्चों (कक्षा 6 से 12 तक) को उत्कृष्ट आवासीय शिक्षा निःशुल्क उपलब्ध कराने के लिए 8 जनपदों में राज्य सरकार द्वारा अपने संसाधनों से राजीव गांधी नवोदय विद्यालयों की स्थापना की गई है। इसमें 75 प्रतिशत स्थान ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियों के लिए तथा 50 प्रतिशत स्थान बालिकाओं के लिए आरक्षित है।

श्यामा प्रसाद मुखर्जी अभिनव विद्यालय– राजीव गांधी नवोदय विद्यालयों की तरह यह विद्यालय भी पूर्णतः राज्य सरकार द्वारा वित्त पोषित और उसी तरह निःशुल्क आवासीय है। वर्तमान में राज्य के 5 जिलों में ऐसे विद्यालय हैं।

कस्तूरबा गॉधी आवासीय विद्यालय योजना– एस0सी0/एस0 टी0 शिक्षा में पिछड़े हुए राज्य के 12 जिलों में कस्तूरबा गांधी विद्यालयों की स्थापना की गयी है। केन्द्र सरकार पोषित इन विद्यालयों में एस0 सी0/एस0 टी0 छात्राओं (कक्षा 6–8) को निःशुल्क आवासीय शिक्षा दी जाती है।

उत्तराखण्ड में विश्वविद्यालय

राज्य निर्माण से पूर्व उत्तराखण्ड में विविध श्रेणियों के 7 वि0वि0 गुरूकुल कांगड़ी वि0वि0, गढ़वाल वि0वि0, कुमाऊँ वि0वि0, जी0बी0 पन्त कृषि एवं प्रौद्योगिकी वि0वि0, आई0 आई0 टी0 रूड़की वि0वि0, एवं एफ0 आर. आई0 वि0वि0 संचालित थे। राज्य निर्माण के बाद उत्तराखण्ड में 5 निजी देव संस्कृति वि0वि0, हिमगिरि जी वि0वि0, इफफाई वि0वि0, पेट्रोलियम वि0वि0, पतंजलि वि0वि0, 6 सरकारी दून वि0वि0, उत्तराखण्ड मुक्त वि0वि0, तकनीकि वि0वि0, संस्कृति वि0वि0 और आयुष वि0वि0 तथा 2 निजी डीम्ड वि0वि0 हिमालयन इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज और ग्राफिक एरा इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी विश्वविद्यालय स्थापित हुए। इसके अतिरिक्त वर्ष 2009 से 3 राष्ट्रीय स्तर के संस्थान भी अस्तित्व में आ चुके है। ये हैं एन0 आई0 टी0 एम्स और

आई0आई0 एम0 । पुनः वर्ष 2012 में 4 नये निजी विश्व विद्यालयों के विधेयक पारित हुआ, जबकि 27 नवम्बर 2014 को विधानसभा में मदरहुड वि0वि0 विधेयक पारित किया गया।

जी0 बी0 पन्त कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, पन्तनगर

देश का प्रथम कृषि विश्वविद्यालय गोविन्द बल्लभ पन्त कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय पन्तनगर, ऊधमसिंहनगर जनपद में स्थित है। इसकी स्थापना 17 नवम्बर 1960 को तत्कालीन प्रधानमन्त्री पं0 जवाहरलाल नेहरू ने की। जी0 बी0 पन्त कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कृषि के क्षेत्र में विश्वस्तरीय संस्थान है। अमेरिका व सोवियत शिक्षा प्रणाली के अनूठे समन्वय का प्रतीक यह विवि वास्तव में भारतीय कृषि क्रान्ति की लाइफलाइन है। विवि को मजबूत नींव व स्पष्ट दिशा देने का श्रेय इसके प्रथम कुलपति डा0 केंनेथ एंथोनी पार्कर स्टीवेंसन को जाता है। वेटरेनेरी, कृषि इंजीनियरिंग फिशरीज एण्ड होम साइंस विभाग वि0वि0 की विशेष पहचान है। पंतनगर विश्वविद्यालय के रानीचौरी हिल कैंपस का उत्तराखण्ड के कृषि एवं उद्यान विकास में विशेष योगदान है।

गुरूकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार

महात्मा मुंशीराम ने सन् 1892 में गुजरावाला में गुरूकुल की स्थापना की। इसके लिए सन् 1901 में मुंशी अमन सिंह द्वारा गंगा पार कांगड़ी गॉव में 14 सौ बीघा भूमि दान में दी। हरिद्वार में 5 मील गंगा के पूर्वी तट पर 2 मार्च 1902 को फूस के छप्परों में महात्मा मुंशीराम गुरूकुल को गुजरावाला से कांगड़ी स्थान ले आये और तब गुरूकुल, गुरूकुल कांगड़ी बन गया। सन् 1921 में यही गुरूकुल महाविद्यालय के रूप में परिणित हुआ तथा वेद, कला, आयुर्वेद और गुरूकुल की बहुत सी इमारतें नष्ट हो गयीं। इस घटना के बाद ज्वालापुर तथा कलखल के मध्य स्थान पर इसकी स्थापना की गई।

हेमवती नन्दन बहुगुणा केन्द्रीय गढ़वाल विश्वविद्यालय, श्रीनगर

गढ़वाल विश्वविद्यालय की स्थापना श्रीनगर गढ़वाल में 1973 में हुई थी। अप्रैल , 1989 में इसका नाम परिवर्तित कर हेमवतीनन्दन बहुगुणा गढ़वाल विश्वविद्यालय कर दिया गया। विश्वविद्यालय के तीन परिसर बिडला परिसर, श्रीनगर गढ़वाल मुख्यालय, डॉ0 वी0 गोपाल रेड्डी परिसर, पौड़ी एवं स्वामी रामतीर्थ बादशाही थौल परिसर, टिहरी है। गढ़वाल विश्वविद्यालय 15 जनवरी, 2009 को केन्द्रीय विश्वविद्यालय के रूप में अस्तित्व में आया है। केन्द्रीय विश्वविद्यालय बन जाने के बाद यहॉ के युवाओं को बेहतर शिक्षा सुविधाएं मुहैया होने की उम्मीद बड़ गई है।

विश्वविद्यालय में कला, विज्ञान, वाणिज्य, कृषि, शिक्षा, विधि एवं अन्तर–विद्यावर्त अनौपचारिक शिक्षा संकायों के अन्तर्गत स्नातक/स्नात्कोत्तर शिक्षण एवं शोध कार्य किये जा रहें हैं। इसके अतिरिक्त विश्वविद्यालय में कई महत्वपूर्ण एवं व्यावसायिक पाठ्यक्रम चलाये जा रहे हें

कुमाऊँ विश्वविद्यालय, नैनीताल

23 नवम्बर 1973 को कुमाऊँ विवि की स्थापना की गई। वर्तमान में इसके अधीन डी0 एस0 बी0 परिसर नैनीताल, एस0 एस0 जे0 परिसर अल्मोड़ा व भीमताल परिसर हैं। इसके साथ ही 31 राजकीय महाविद्यालय सहित पांच सहायता प्राप्त अशासकीय महाविद्यालय इससे सम्बद्ध हैं। विवि0 के अन्तर्गत 24 स्ववित्तपोषित महाविद्यालय व संस्थान भी हैं। यहां कला, वाणिज्य, विज्ञान व विधि संकाय स्थापित हें पर्यटन का एक वर्षीय पी0 जी0 डिप्लोमा भी यहां उपलब्ध है। विधि को स्नातक व परास्नातक तथा बी0 एड0 को लिए अल्मोड़ा परिसर में व्यवस्था हें पत्रकारिता व जनसंचार में स्नात्कोत्तर डिप्लोमा तथा योग पाठ्यक्रम भी उपलब्ध हें भीमताल परिसर में एम0 बी0 ए0, एम0 एस0 सी0. बायोटेक्नोलाजी प्रोफेशनल कोर्सेज में शामिल हें

वन अनुसंधान संस्थान, डीम्ड विश्वविद्यालय

देहरादून स्थित वन अनुसंधान संस्थान की वानिकी को क्षेत्र में विशिष्ट पहचान हैं। भारत के प्रथम वन महानिदेशक डॉ0 डिट्रिच बैंडिस की सलाह पर सन् 1878 में देहरादून में देश को प्रथम वन महाविद्यालय की

स्थापना की गई। सन् 1884 में इसका नाम इंपीरियल फॉरेस्ट स्कूल रखा गया। इस स्कूल की सन् 1906 में अनुसंधान कार्य के लिए जोड़ते हुए इसका नया नामकरण इंपीरियल फॉरेस्ट रिसर्च इंस्टीट्यूट रखा गया। वर्तमान एफ0 आर0 आई0 भवन परिसर की आधारशिला 1923 में रखी गयी थी। भवन का डिजाइन ब्रिटिश वास्तुविद सी0 जी0 ब्लोम फील्ड ने तैयार किया, जिसका उद्घाटन 7 नवम्बर 1929 को वायसराय लार्ड इरविन ने किया था। भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद् का मुख्य कार्य देश की वानिकी अनुसंधान नीति को सुत्रित करना और इसके संघटक संस्थानों, केन्द्रों और संबधित एवं विश्वविद्यालयों को वानिकी अनुसंधान कार्यकलापों का समन्वय करना हें

आई0 आई0 टी0 रूड़की

सन् 1847 में रूड़की कॉलेज के नाम से स्थापित इस संस्था का उद्देश्य गंगा नहर को निर्माण में लगे कर्मियों को तकनीकी प्रशिक्षण देना था। सन् 1854 में इसे थॉमसन कॉलेज ऑफ सिविल इंजीनियरिंग का नाम दिया गया। सन् 1946 में इलेक्ट्रीकल व मैकनीकल इंजीनियरिंग की शिक्षा आरम्भ होने के बाद सन् 1949 में इसका नाम बदलकर थॉमसन कॉलेज ऑफ इंजीनियरिंग कर दिया गया। 21 सितंम्बर 2001 को संसद में एक एक्ट पारित होने के बाद केन्द्र सरकार ने रूड़की विश्वविद्यालय को भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान आई0 आई0 टी0 में बदल दिया। इस समय परिसर के दो परिसर हैं। 356 एकड़ में फैले रूड़की परिसर के अलावा उत्तर प्रदेश के सहारनपुर जनपद में संस्थान का पेपर तकनीकि विभाग स्थित हैं इस समय संस्थान में कुल 18 एकेडमिक विभाग और 6 प्रशिक्षण केन्द्र कार्य कर रहे हैं। संस्थान का वैकल्पिक जल ऊर्जा केन्द्र, सेंटर फॉर कन्टीन्यूइंग एजुकेशन, इंस्टीट्यूट ऑफ इंस्टूमेटेशन सेंटर इन्फॉरमेशन सुपर हाईवे सेंटर और क्वालिटी इंप्रूवमेंट प्रोग्राम सेंटर की गिनती भी भारत को सर्वश्रेष्ट प्रशिक्षण केन्द्रों में की जाती हैं। संस्थान में इस समय आर्किटक्ट एण्ड प्लानिंग, बॉयोटेक्नोलोजी, कैमिकल इंजीनियरिंग, कैमिस्ट्री, सिविल इंजीनियरिंग, अर्थ साइंस, इलेक्ट्रीकल इंजीनियरिंग, इलैक्ट्रानिक्स एण्ड कम्प्यूटर इंजीनियरिंग, पेपर टैक्नोलाजी, फिजिक्स और वाटर रिसोर्स डेवलपमेंट ट्रेनिंग सेंटर को विभाग कार्यरत हैं।

देव संस्कृति विश्वविद्यालय, हरिद्वार

वैज्ञानिक आध्यात्मवादी चिन्तक वेदमूर्ति पं0 श्रीराम शर्मा आचार्य की परिकल्पनाओं का मूर्तस्वरूप देव संस्कृति विश्वविद्यालय शान्तिकुंज हरिद्वार की स्थापना उत्तराखण्ड विधानसभा से पारित देव संस्कृति विश्वविद्यालय विधेयक 2002 के अन्तर्गत वेदमाता गायत्री ट्रस्ट, शांति कुंज, हरिद्वार द्वारा की गई है। विश्वविद्यालय के चार संकाय साधना, स्वास्थ्य शिक्षा एवं स्वावलम्बन इसके परिषर की चारों दिशाओं में स्थापित है। इनके माध्यम से देव संस्कृति का शिक्षण एवं प्रसार, देव संस्कृति पर आधारित विज्ञान की धाराओं ज्योतिष, आयुर्वेद, मंत्र विज्ञान, योग विज्ञान, मनोविज्ञान आदि पर शिक्षण एवं शोध तथा पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य के विचारों पर आधारित रोजगारपरक पाठ्यक्रमों, आपदा एवं प्रबन्धन पर अध्ययन हेतु स्नात्कोत्तर स्तर पर योग विज्ञान, नैदानिक मनोविज्ञान, भारतीय संस्कृति एवं पर्यटन प्रबन्धन, एक वर्षीय डिप्लोमा में योग विज्ञान एवं अंग्रेजी भाषा तथा प्रमाण पत्र पाठ्यक्रम 6 माह योग विज्ञान, समग्र स्वास्थ्य प्रबन्धन, धर्म विज्ञान तथा ग्राम प्रबन्धन के पाठ्यक्रम सम्मिलित है।

पेट्रोलियम एवं ऊर्जा विश्वविद्यालय, देहरादून

यह वि0वि0 तेल, गैस, ऊर्जा, परिवहन व अवस्थापना क्षेत्र के लिए प्रशिक्षित प्रोफेशनल तैयार करता है। विवि ऊर्जा के क्षेत्र में यह विश्वविद्यालय एशिया में इस तरह की शिक्षा देने वाला एकमात्र संस्थान है। यू0 सी0 जी0 से मान्यता प्राप्त विवि0 33 प्रकार के ग्रेजुएट, पोस्ट ग्रेजुएट, प्रबन्धक आदि में शोध उपाधि देता है। वि0वि0 वैकल्पिक ऊर्जा स्त्रोतों एवं भविष्य को ईधन पर भी शोध करवाता है, इसमें से बायो–फ्यूल, बायो–एनर्जी, सोलर एवं विंड एनर्जी पर विशेष कार्य हो रहा है। विवि के स्नातक पाठ्यक्रमों में प्रवेश के लिए सीनियर सेकेन्ड्री स्तर पर प्रथम श्रेणी तथा पोस्ट ग्रेजुएट कक्षाओं में प्रवेश के लिए राष्ट्रीय स्तर पर आयोजित होने वाली कैट या मैट परीक्षा उत्तीर्ण होना अनिवार्य है।

हिमगिरि विश्वविद्यालय, देहरादून

अहमदाबाद की तालीम रिसर्च फाउण्डेंशन द्वारा स्थापित किए गए इस विश्वविद्यालय का मुख्यालय देहरादून में हैं राज्य के सभी जिलों में इसके अध्ययन केन्द्र स्थापित किये जाने का प्रयास किया जा रहा है। इसका उद्देश्य उत्तराखण्ड में मल्टी मीडिया एवं सूचना प्रौद्योगिकी द्वारा शिक्षा प्रसार एवं दूरस्थ क्षेत्रों में इसे प्रोत्साहित करना है।

दून विश्वविद्यालय, देहरादून

दून विश्वविद्यालय की आधारशिला 14 नवम्बर 2004 को देहरादून स्थित केदारपुरम में रखी गई। दून विश्वविद्यालय को जेएनयू पैटर्न पर विकसित किया जा रहा है। उत्तराखण्ड के संदर्भ में पर्यावरण व प्राकृतिक संसाधनों का विशेष महत्व हैं अभी तक इनके व्यवस्थित व गुणवत्तापूर्ण अध्ययन के लिए स्थानीय स्तर पर विशिष्ट पाठ्यक्रम नहीं थे। इनकी शुरूआत दून विश्वविद्यालय ने की है। जिस प्रकार से पर्यावरण व जलवायु परिवर्तन की समस्या गहरा रही है, ऐसे में आने वाले समय में बड़ी संख्या में पर्यावरण विशेषज्ञों की जरूरत रहेगी। इस डिग्री के साथ उत्तराखण्ड में स्थित वैज्ञानिक संस्थानों, संस्थाओं के साथ अध्यापन में रोजगार है। उसी प्रकार, उत्तराखण्ड को युवाओं का बड़ी संख्या में प्रिंट व इलेक्ट्रानिक मीडिया में रूझान देखकर उनको राज्य स्तर पर अच्छा प्रशिक्षण देने का भी प्रयास है।

उत्तराखण्ड संस्कृत विश्वविद्यालय, हरिद्वार

हरिद्वार में स्थापित उत्तराखण्ड संस्कृत विश्वविद्यालय में संस्कृत के साथ–साथ संस्कृत की सहयोगी भाषाओं के उन्नयन पर कार्य किया जा रहा है। यह विवि प्राच्य और आधुनिक शिक्षा के केन्द्र के तौर पर विकसित हो रहा है। 13 नवम्बर, 2005 को तत्कालीन मुख्यमन्त्री नारायणदत्त तिवारी ने रानीपुर के निकट 35 एकड़ भूमि पर उत्तराखण्ड संस्कृत विश्वविद्यालय का शिलान्यास किया । यह संस्कृत विश्वविद्यालय पूर्ण राजकीय वित्त पोषित है। विश्वविद्यालय में परम्परागत पाठ्यक्रमों को अलावा व्यावसायिक पाठ्यक्रम भी उपलब्ध है। विश्वविद्यालय में शिक्षा शास्त्री बी0 एड0 , शिक्षाचार्य एम0 एड0, बी0 लिब, दिव्य संगीत सहित 8 नए कोर्स शुरू किए गए है। इस विश्वविद्यालय से 47 संस्कृत महाविद्यालय संबद्ध है। सभी पाठ्यक्रमों में सह–शिक्षा की व्यवस्था है।

उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय, हल्द्वानी

उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय वर्तमान में बी0ए0, बी0 काम0 व बी0 टी0 सी0 बैचलर डिग्री इन टूरिज्म स्टडीज के साथ ही डिप्लोमा इन संस्कृत पी0 जी0 डिप्लोमा इन जर्नलिज्म एण्ड मास कम्युनिकेशन, पी0 जी0 डिप्लोमा इन डिजास्टर मैनेजमेंट के साथ व्यावसायिक पाठ्यक्रम संचालित कर रहा है। उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय राज्य का एकमात्र मुक्त विश्वविद्यालय है। यह विश्वविद्यालय हल्द्वानी में स्थापित है। विद्यार्थी विश्वविद्यालय के राज्य भर में चल रहे 30 स्टडी सेंटरों में जाकर भी पड़ाई कर सकते है। विश्वविद्यालय में प्रवेश के लिए विश्वविद्यालय के स्टडी सेंटर के माध्यम से भी आवेदन किया जा सकता हैं। विश्वविद्यालय से डिग्री विश्वविद्यालय के विभिन्न परीक्षा केन्द्रों में संचालित की जाती हैं।

उत्तराखण्ड तकनीकी विश्वविद्यालय, देहरादून

वर्ष 2005 में उत्तराखण्ड तकनीकी विश्वविद्यालय की स्थापना की गई। राज्य के उन सभी कॉलेजों को तकनीकी विश्वविद्यालय के साथ संबद्ध कर दिया गया जिनमें ए0 आई0 सी0 टी0 ए0 के तहत आने वाली इंजीनियरिंग और प्रोफेशनल पाठ्यक्रम संचालित हो रहे है। फिलहाल, बी0 टेक0 के 11 बी0 फार्मा0–एम0 फार्मा0 के 9, एम0 सी0 ए0 के 15, एम0 बी0 ए0 के 16 और होटल मैनेजमेण्ट के 6 कॉलेज इस विश्वविद्यालय के हिस्से हैं। विश्वविद्यालय के परिसर में भी इंजीनियरिंग उपाधियों का संचालन हो रहा है। विश्वविद्यालय से संबद्ध कॉलेजों में बी0 टेक0 स्तर पर सिविल, सी0 एस0 टी0 इलेक्ट्रीकल, इलेक्ट्रानिक्स, बायो केमिकल, एप्लाइड इलेक्ट्रानिक्स, आईटी, इंडस्ट्रीयल, मैकेनिकल आदि संचालित हैं।

पंतजलि योग विद्यापीठ, डीम्ड विश्वविद्यालय, हरिद्वार

योग शिक्षा के प्रचार और प्रसार के संकल्प के साथ तीर्थनगरी हरिद्वार में पंतजलि योगपीठ ने कार्य करना शुरू कर दिया है। विश्वविख्यात स्वामी रामदेव के माध्यम से योग शिक्षा के प्रचार प्रसार के लिए अब तक जो महत्वपूर्ण प्रयास हुए हैं, उन्हें इस योग पीठ की स्थापना से और भी ज्यादा प्रसिद्धि प्राप्त होगी और अधिक से अधिक लोग योग को ग्रहण कर सकेंगे। उत्तराखण्ड सरकार ने इसको 25 मार्च, 2006 को डीम्ड विश्वविद्यालय का दर्जा दिया गया है।

हिमालयन इंस्टीट्यूट मेडिकल विश्वविद्यालय, जौली–ग्रांट

जौलीग्रांट स्थित हिमालयन इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज को 7 जून 2007 को डीम्ड यूनीवर्सिटी का दर्जा प्राप्त हुआ है। 12 साल पुराना यह इंस्टीट्यूट राज्य का पहला मेडिकल विश्वविद्यालय तथा निजी डीम्ड यूनीवर्सिटी है। यूनीवर्सिटी का संचालन स्वामी राम विद्यापीठ के तहत ही किया जा रहा है।

ग्राफिक एरा : डीम्ड यूनिवर्सिटी, देहरादून

गढ़वाल विश्वविद्यालय से सम्बद्ध ग्राफिक एरा इंस्टीट्यूट को वर्ष 2008 में मानव संसाधन विकास मंत्रालय की ओर से डीम्ड यूनिवर्सिटी का दर्जा दिया गया है। ग्राफिक एरा संस्थान में अभी तक इस समय 15 कोर्स संचालित किए जा रहे हैं।

आयुर्वेदिक विश्वविद्यालय, देहरादून

इस विश्वविद्यालय की स्थापना उत्तराखण्ड विधानसभा में 15 जुलाई 2009 में पारित उत्तराखण्ड आयुर्वेदिक वि0 वि0 विधेयक 2009 के द्वारा की गई है। इस वि0 वि0 का मुख्यालय देहरादून में है। आयुर्वेदिक वि0 वि0 अब बी0 ए0, एम0 एस0 तथा आयुर्वेद में एम0 डी0 डिग्री तक सीमित नहीं रहेगा बल्कि वि0 वि0 के अकादमिक क्षेत्र को योग, नैचुरोपैथी, फॉर्मेसी और हैल्थ मैनेजमेण्ट तक विस्तार दिया गया है। इन क्षेत्रों में काम कर रहे राज्य के शोध संस्थानों को भी आयुर्वेदिक वि0 वि0 से सम्बद्ध किया गया है।

ईक्फाई वि0 वि0

इन्सटीट्यूट ऑफ फाइनेन्सीएल एनेलाइसीस ऑफ इंडियन यूनिवर्सिटी की स्थापना देहरादून में की जा रहीं है। प्रारम्भ में इसमें फाइनेन्सियल पाठ्यक्रम चलाये जायेंगे। बाद में अन्य पाठ्यक्रम शुरू किये जायेंगें।

पतंजलि योग विद्यापीठ

राज्य सरकार ने 25 मार्च 2006 को एक प्रस्ताव द्वारा हरिद्वार स्थित पतंजलि योग विद्यापीठ को डीम्ड वि0वि0 का दर्जा प्रदान किया और स्वामी रामदेव को इसका आजीवन कुलाधिपति नामित किया।

स्वामीराम विद्यापीठ डीम्ड वि0 वि0

महान संत योगी और समाज सुधारक डॉ. स्वामी राम की स्मृति में देश–विदेश में फैले उनके शिष्यों द्वारा 1989 में जौलीग्रांट, देहरादून और ऋषिकेश के मध्य, नामक स्थान पर स्थापित हिमालयन इंस्टीट्यूट हॉस्पिटल ट्रस्ट, जिसके अन्तर्गत एक मेडिकल कालेज, एक स्कूल ऑफ नर्सिंग तथा एक ग्राम्य विकास केन्द्र है, को 2007 में डीम्ड वि0 वि0 का दर्जा दे दिया गया है। इस ट्रस्ट के मेडिकल कॉलेज को उत्तराखण्ड का प्रथम मेडिकल कॉलेज होने का गौरव प्राप्त है। अब वह राज्य का प्रथम मेडिकल वि0 वि0 भी हो गया है।

संस्कृत वि0वि0

राज्य में संस्कृत शिक्षा के प्रोत्साहन के लिए हरिद्वार के रानीपुर झील के समीप दिल्ली के अक्षरधाम मंदिर की तर्ज पर विश्व संस्कृत धाम के रूप में इस वि0 वि0 को विकसित किया जा रहा है। राज्य सरकार ने इसका प्रथम कुलपति बाल स्वरूप ब्रह्मचारी को नियुक्त किया है।

तकनीकि वि0 वि0

राज्य में सरकारी एवं गैर सरकारी डिग्री स्तर के प्राविधिक संस्थानों को एक संस्था के अन्तर्गत लाने के उद्देश्य से देहरादून में उत्तराखण्ड तकनीकि वि0 वि0 की स्थापना की गई है।

हिमालयन इंस्टीट्यूट मेडिकल कालेज, जौलीग्रांट, देहरादून

महान कर्मयोगी, दार्शनिक, वैज्ञानिक तथा लेखक स्वामीराम द्वारा स्थापित यह ट्रस्ट, सामाजिक विकास, जन स्वास्थ्य, शिक्षा तथा जनसाधारण को आधुनिक चिकित्सा उपलब्ध कराकर जन–कल्याण हेतु समर्पित है। इस वृहत संस्थान की स्थापना में इण्डो–अमेरिकन फ्रेंडशिप, एसोसिएशन और अमेरिका के हिमालयन इंटरनेशनल इंस्टीट्यूट आफ योग साइंस जैसे संस्थानों ने योगदान दिया है। संस्थान का मूल उद्देश्य उत्तराखण्ड के आर्थिक रूप से दुर्बल समाज को नवीनतम तकनीक के साथ न्यूनतम व्यय पर चिकित्सा सुविधायें उपलब्ध कराकर इस क्षेत्र की सेवा करना है। 1989 में लघु रूप में स्थापित यह संस्थान डीम्ड विश्वविद्यालय की श्रेणी में आ गया है। इस चिकित्सा संस्थान की योजना ऐसे आधुनिकतम चिकित्सालय का स्वरूप ग्रहण करने की है, जिसमें ढाई हजार रोगियों का उपचार एक ही समय पर हो सके।

शैक्षिक संस्थान, शोध संस्थान अकादमियॉ तथा संग्रहालय

गोविन्द बल्लभ पन्त हिमालयन पर्यावरण संस्थान, कोसी, अल्मोड़ा: पर्वतीय क्षेत्रों में पर्यावरण उच्च स्तरीय अध्ययन, शोध एवं प्रयोगों के लिए यह संस्थान विख्यात है।

भारतीय वन अनुसंधान संस्थान, देहरादून: इस संस्थान की स्थापना 1906 में हुई थी। 12000 एकड़ में फैले इस संस्थान में टिम्बर म्यूजियम, मिनौर, फॉरेस्ट प्रोजेक्ट म्यूजियम, सिल्वीकल्चर, सोशल फॉरेस्ट्री एवं पैथोलॉजी म्यूजियम भी हैं।

भारतीय पशु चिकित्सा एवं अनुसंधान संस्थान, मुक्तेश्वर: इसकी स्थापना 1893 में डा0 लिंगगार्ड ने की थी। यह संस्थान नैनीताल जनपद में स्थित है।

भारतीय पेट्रोलियम संस्थान : यह संस्थान देहरादून में स्थित है।

तेल एवं प्राकृतिक गैस निगम लिमिटेड: यह कम्पनी भारत के खनिज तेल, प्राकृतिक गैस का 80 प्रतिशत उत्पादन करती हैं। 1956 में इसका मुख्यालय देहरादून में स्थापित किया गया था। इस कम्पनी ने 70 के दशक में बॉम्बे हाई में विशाल तेल एवं गैस–क्षेत्र की खोज करके देश के परिदृश्य को बदल दिया। सन् 2007–08 में इस कम्पनी ने तेल व गैस के 5 नए भण्डार खोजे हैं। तेल व गैस के भण्डार असम क्षेत्र त्रिपुरा, कृष्णा–गोदावरी एवं महानदी बेसिन में है।

राजकीय वेधशाला, नैनीताल: इसकी स्थापना 1954 में बनारस में हुई थी। 1955 में इसे नैनीताल स्थित शेर–का–डांडा, पहाड़ी पर स्थापित किया गया। सन् 1961 में इसे वर्तमान स्थल मनोरा पीक में स्थापित किया गया। यहॉ अन्य कई दूरबीनों के अलावा 104 सेमी0 व्यास वाली डॉ0 सम्पूर्णानन्द दूरबीन भी है जिससे अब तक कई खगोलीय निष्कर्षो के समाधान में मदद मिली है।

राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद् उत्तराखण्ड: शिक्षकों के लिए प्रशिक्षण की व्यवस्था, शिक्षा के क्षेत्र में अनुसंधान, विद्यालयों का समय–समय पर मूल्यांकन की दृष्टि से 17 जनवरी, 2002 को राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद् नरेन्द्रनगर, टिहरी गढ़वाल में स्थापित किया गया। पैतृक राज्य उत्तर प्रदेश की अवधारणा विभिन्न स्थानों पर स्थित 11 संस्थानों, मनोविज्ञानशाला, राज्य शिक्षा संस्थान, राज्य विज्ञान संस्थान, राज्य शैक्षिक प्रबन्धन एवं प्रशिक्षण संस्थान आदि, के मुख्यालय के विपरीत, उत्तराखण्ड में इन सभी संस्थानों के

कार्यदायित्वों को एक में समाहित करते हुए राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद् की स्थापना की गयी। वर्तमान में देहरादून स्थानांतरित।

विवेकानन्द पर्वतीय कृषि अनुसंधानशाला, अल्मोड़ाः पर्वतीय क्षत्रों में कृषि सम्बन्धी अनुसंधानों के लिए इस संस्थान की स्थापना डॉ0 बोसी सेन ने 1924 में की थी। यह भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, पूसा की पर्वतीय इकाई है। इस संस्थान में गेहूँ की बी0 एल0 616, बी0. एल0 421, सोयाबीन की बी0 एल0 52, धान की बी0 एल0 163, मटर की बी0एल0 3, मंडुवा रागी की बी0 एल0 149, बी0 एल0 29, मादिरा की बी0 एल0 21 आदि अन्य कई फसलों की कई किस्में तैयार की जा चुकी है।

हाई अल्टीट्यूड प्लांट फिजियोलॉजी रिसर्च सेंटर : यह श्रीनगर, गढ़वाल में स्थित है। यहॉ वन्य वनस्पितियों के बारे में विशद अध्ययन और शोधकार्य होते है।

दून पुस्तकालय एवं शोध केन्द्र : सामाजिक विज्ञान एवं मानविकी के क्षेत्र में हिमालयी अध्ययन पर केन्द्रित दून पुस्तकालय एवं शोधकेन्द्र की स्थापना 8 दिसम्बर 2006 को परेड ग्राउंड, देहरादून में की गई। वर्तमान में इस संस्थान के पुस्तकालय में सामाजिक विज्ञान व अन्य विषयों की लगभग 20500 से अधिक पुस्तकों के अलावा महत्वपूर्ण शोध पत्रिकाएं, रिपोर्ट व प्रमुख समाचार पत्र उपलब्ध हैं। इस संस्थान के शोध केन्द्र द्वारा हिमालय विशेष रूप से उत्तराखण्ड पर आधारित शोध कार्यों को बढ़ावा दिया जा रहा है। समय–समय पर हिमालय से जुड़े मुद्दों व सम–सामयिक प्रसंगों पर संगोष्ठी, व्याख्यान, परिचर्चा व प्रदर्शनियों का आयोजन भी संस्थान द्वारा किया जाता है। प्रतिष्ठित समाज विज्ञानी एवं कुमाऊँ विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति प्रो0 बी0 के0 जोशी इस संस्थान के निदेशक है।

ललित कला अकादमी : सांस्कृतिक तथा साहित्यिक गतिविधियों को बढ़ावा देने के लिए राज्य में ललित कला अकादमी का गठन किया जा रहा है। अकादमी स्वायत्त रूप से काम करेगी। अकादमी का कार्यालय राजधानी में बनने वाले सभागार में होगा। भूमि का शिलान्यास वर्ष 2008 को हुआ। सरकार की योजना सभागार व आर्ट गैलरी के संचालन की जिम्मेदारी अकादमी को देने की है। अकादमी में साहित्य, संगीत तथा ललित कलाओं की अलग–अलग इकाइयां बनाई जाएगी। इसमें इन क्षेत्रों के विशेषज्ञों को शामिल किया जायेगा। अकादमी का मुख्य उद्देश्य इन क्षेत्रों पर आधारित कार्यक्रम आधारित कराने के साथ ही प्रतिभावों को सामने लाना होगा।

दून आर्ट सोसायटी : दून आर्ट सोसायटी प्रोफेशनल और नॉन प्रोफेशनल दोनों प्रकार के कलाकारों को मंच प्राप्त कर रहीं है। साथ ही सोसायटी नवोदित कलाकारों को भी समय–समय पर प्रात्साहित भी कर रहीं हैं ताकि उनकी कलाकृतियों को विश्व स्तर पर पहचान मिल सकें। सोसायटी का उद्देश्य राज्य में कला को बढ़ावा देना है। इसके लिए समय–समय पर प्रदर्शनी, सेमिनार, कार्यशाला और स्कूलों में प्रतियोगिताएं आयोजित की जाती है। नए कलाकारों को भी सोसायटी प्रोत्साहित कर रहीं है। दून आर्ट सोसायटी की अध्यक्ष श्रीमती मोनिका तालुकदार हैं।

संग्रहालय

जिम कार्बेट नेशनल पार्क म्यूजियम, कालाढुंगी, रामनगर–हल्द्वानी मोटर मार्ग पर आकर्षक पर्यटक स्थल है। विश्व प्रसिद्ध शिकारी जिम कॉर्बेट के शिकार की अनेक रोमाचक घटनाओं का गवाह कालाढुंगी है। वे यहॉ निवास करते थे। उनके निवास का भव्य संग्रहालय के रूप में स्थापित किया गया है। यहॉ पर उनके शिकार सम्बन्धी अभियानों की साहित्य, अभिलेखों, स्मृतिचिन्हों, स्मारिकाओं एवं अवशेषों आदि के माध्यम से संरक्षित करके रखा गया है।

देहरादून वन संग्रहालयः सन् 1914 में स्थापित इस संग्रहालय में बनों से होने वाले उत्पादनों और सम्बन्धित विषयों पर नमूनों का संग्रह किया गया है। वन अनुसंधान केन्द्र में स्थित इस संग्रहालय की हिमालयी वनस्पतियों के संग्रह में बहुत बड़ी भूमिका है।

पं0 गोविन्दबल्लभ पन्त राजकीय संग्रहालय, अल्मोड़ाः माल रोड, अल्मोड़ा में स्थित यह संग्रहालय कुमाऊँ–गढ़वाल में प्राप्त प्रतिमाओं, मूर्तियों, सिक्कों, शिल्प कला, पारम्परिक आभूषणों आदि के संग्रह के लिए प्रसिद्ध है। यहाँ पं0 गोविन्दबल्लभ पन्त से सम्बन्धित कई चित्र, उनकी निजी वस्तुएँ आदि भी प्रदर्शित की गई है।

मोलाराम चित्र–संग्रहालय, श्रीनगर : श्रीनगर में गढ़वाल चित्रशैली के जनक मोलाराम के बनाए दुर्लभ चित्रों का संग्रहालय है।

लोक सस्कृति संग्रहालय, खुटानी, भीमतालः उत्तराखण्ड के प्रसिद्ध इतिहासविद् एवं चित्रकार डॉ0 यशोधर मठपाल द्वारा स्थापित इस संग्रहालय में कुमाउनी लोक संस्कृति से सम्बन्धित कलाकृतियों व वस्तुओं का संग्रह किया गया है।

हिमालय पुरातत्व एवं नृवंशीय संग्रहालय, श्रीनगरः गढ़वाल विश्वविद्यालय, श्रीनगर के अधीन वर्ष 1980 में स्थापित यह संग्रहालय मध्य हिमालय की सांस्कृतिक धरोहर का संरक्षण तथा अनुरक्षण कर रहा है।

हिमालय संग्रहालय, कुमाऊँ विश्वविद्यालय, नैनीताल : कुमाऊँ विश्वविद्यालय में इतिहास विभाग के डी0 एस0 बी0 परिसर नैनीताल में वर्ष 2005 में हिमालय संग्रहालय की स्थापना की गई है। संग्रहालय में उत्तराखण्ड के समाज संस्कृति, राष्ट्रीय आंदोलन, क्षेत्रीय पत्रकारिता, मन्दिरों ताम्रपत्रों, व्यक्तियों, दस्तावेजों और छापा चित्रों का संग्रह किया गया है। महात्मा गॉधी के कुमाऊँ आगमन के छाया चित्रों से लेकर उत्तराखण्ड के प्रथम राजनैतिक बंदी मोहन मेहता, कॉमरेड पी0 सी0 जोशी, राम सिंह धौनी, विक्टर मोहन जोशी, श्रीदेव सुमन, नागेन्द्र सकलानी आदि स्वाधीनता सेनानियों के छाया चित्र है। पत्रकारिता गैलरी में अल्मोड़ा अखबार, प्रथम प्रकाशन 1871, गढ़वाल समाचार 1902, शक्ति 1918, स्वाधीन प्रजा 1930, समता 1935, कर्मभूमि, तरूण कुमाऊँ, कुमाऊँ कुमुद जैसे अखबारों के छाया चित्र तथा मूल प्रतियॉ दर्शायी गयी है। उत्तराखण्ड से प्रकाशित प्रथम दैनिक पत्र पर्वतीय की समस्त फाइलें यहॉ मौजूद हैं। दस्तावेजों में औरंगजेब के राजा फतेहशाह के फरमान सेकर विभिन्न ब्रिटिशकालीन दस्तावेज हैं। संग्रहालय की पुरातत्व गैलरी बहुत समृद्ध है। मूर्तियों में सूर्य, चतुर्भुजी गणेश, विष्णु–लक्ष्मी, वाराह–अवतार, शुंगकालीन छत्रयुक्त राजा शक्ति, प्रतिमा आदि दुर्लभ मूर्तियॉ भी है जिनका अनुमानित काल ईसवी पूर्व दूसरी सदी से लेकर 12वीं सदी के बीच है। सिक्का गैलरी में कुषाण कालीन स्वर्ण मुद्रा से लेकर मध्यकालीन मुहरें तथा आधुनिक सिक्के हैं।

अन्य शोध कार्यशालायें

फॉरेस्ट ट्रेनिंग इंस्टीट्यूट, हल्द्वानी, नैनीताल, टरार अनुसंधान केन्द्र, भीमताल, नैनीताल, ड्रग्स कंपोजिट रिसर्च यूनिट, रानीखेत, अल्मोड़ा, सेंट्रल बिल्डिंग रिसर्च इंस्टीट्यूट, रूड़की, हरिद्वार, स्ट्रक्चरल इंजीनियरिंग रिसर्च सेंटर, रूड़की, हरिद्वार, इंडस्ट्रीयल टैक्सोकोलोजिकल रिसर्च सेंटर, रूड़की, हरिद्वार, वाडिया इंस्टीट्यूट ऑफ हिमालयन जियोलोजी, देहरादून, भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण, देहरादून, इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ रिमोट सेंसिंग, देहरादून, ड्रिलिंग टैक्नोलोजी इंस्टीट्यूट, देहरादून, ऑयल एण्ड नैचुरल गैस कार्पोरेशन, देहरादून, आई0 आर0 डी0 ई0, रायपुर, देहरादून, राष्ट्रीय दृष्टिबाधितार्थ संस्थान तथा राष्ट्रीय हड्डी विकलांगता संस्थान, देहरादून, इलेक्ट्रानिक्स सर्विस एंड ट्रैनिंग सेंटर, कानिया, रामनगर नैनीताल,

लघु उद्योग सेवा संस्थान, हल्द्वानी, नैनीताल, सेंट्रल मेडिसिनल एवं एरोमेटिक प्लांट संस्थान, नगला, ऊधमसिंहनगर, डिफेंस इलेक्ट्रॉनिक्स एप्लीकेशंस लेबोरेट्री, देहरादून, राष्ट्रीय पादप एवं जैविकी अनुसंधान ब्यूरो,

निगलाट, भवाली, नैनीताल, हिल्ट्रान, भीमताल, नैनीताल, जड़ी बूटी शोध संस्थान, गोपेश्वर, चमोली, राज्य बीज एवं जैविक उत्पाद प्रमाणीकरण संस्थान, देहरादून,
रक्षा–कृषि शोध संस्थान, अल्मोड़ा

अकादमियॉ

भारतीय सैन्य अकादमी, देहरादून, लालबहादुर शास्त्री राष्ट्रीय प्रशासनिक अकादमी, मसूरी, प्रशासनिक प्रशिक्षण अकादमी, नैनीताल

प्रमुख स्वयंसेवी / शासकीय संस्थाएँ

1. श्री भुवनेश्वरी महिला अश्रम अंजनीसैण, टिहरी: स्वामी मन्मथन द्वारा स्थापित यह संस्था 1970 से वित्तीय सहायता प्राप्तकर शिक्षा, स्वास्थ्य, प्राकृतिक स्त्रोत, प्रबन्धन सूचना एवं संचार आदि विधाओं पर कार्यरत है।

2. सोसाइटी फॉर इन्टीग्रेटेड डेवलपमेन्ट इन हिमालय, सिद्धः मसूरी के निकट जनपद टिहरी गढ़वाल के पर्यटक स्थल कैम्पटीफॉल में स्थित यह संस्था आवासीय विद्यालयों के माध्यम से बच्चों के सर्वांगीण विकास पर कार्य कर रही है।

3. हिमालयन इन्स्टीट्यूट हॉस्पिटल ट्रस्ट, जौलीग्रान्ट, देहरादूनः यह ट्रस्ट दार्शनिक व महान योगी स्वामीराम के आदर्शों एवं विचारों पर आधारित मानव जीवन से सम्बन्धित उद्देश्यों के प्रति समर्पित है।

4. हिमालयन एक्शन एण्ड रिसर्च सेन्टर हार्क देहरादूनः सन् 1988 में स्थापित यह संस्था जन समुदाय के समग्र विकास की योजनाओं को उसके सांस्कृतिक मूल्यों, परम्पराओं एवं स्थानीय संसाधनों से जोड़कर संचालित करने का कार्य कर रही है।

5. उत्तराखण्ड सेवा निधिः प्रदेश में राष्ट्रीय पर्यावरण जागरूकता अभियान को संचालित करने वाली यह संस्था पर्यावरण एवं वन मन्त्रालय भारत सरकार द्वारा सन् 1986 से वित्त पोषण प्राप्तकर कार्य कर रहीं है।

6. हिमालयी पर्यावरण शिक्षा संस्थानः टिहरी एवं उत्तरकाशी जनपद के लगभग 95 गॉवों में जनवरी 1995 से हिमालय की पारिस्थिकी को ध्यान में रखते हुए पानी और पेड़ के संरक्षण और संवर्द्धन हेतु यह संस्था चाल तथा जैव–विविधता–संरक्षण पर कार्य कर रही है।

7. इंस्टीट्यूट ऑफ हिमालयन इन्वायरमेन्टल रिसर्च एण्ड एजुकेशन, अल्मोड़ाः यह संस्था सन् 1981 से हिमालय में शोध एवं अन्वेषण, मानव संसाधन विकास पर्यावरण, जीवन सुरक्षा सम्बन्धी, कार्य कर रही है।

8. उत्तरांचल पुस्तकालय एसोसिएशन, देहरादूनः प्रदेश में ग्रन्थालय सेवा का ग्रामीण स्तर से राज्य स्तर तक गठन करके इसे जनसामान्य को सुलभ कराए जाने हेतु यह संस्था कार्य कर रही है।

9. गिरीश गृह उद्योग एवं रेशा उत्पादन समिति, देहरादूनः इस संस्था ने प्रदेश में पहली बार रामबांस रोपण से लेकर उसके रेशों से दैनिक उपयोग के कई उत्पाद बनाने का कार्य प्रशस्त किया है।

10. ग्रामीण तकनीकि समिति, आमसौढ़, कोटद्वारः यह संस्था पेयजल, जलागम, विकास, कृषि फलोत्पादन तथा औषधि पादप रोजगार की दिशा में कार्यरत है।

11. सम्बन्ध, देहरादूनः यह राज्य की स्वयंसेवी संस्थाओं का संगठन है, जो स्वयंसेवी संस्थाओं की क्षमता बढ़ाने, उन्हें एक मंच प्रदान करने एवं दूरदराज तक नहीं पहुंचने वाली विभिन्न सूचनाएं देने आदि का कार्य कर रही है।

12. ग्रामीण और कृषि विकास समिति, हल्द्वानीः 25 मार्च 1995 को स्थापित यह बहुउद्देश्यीय संस्था प्रदेश के पर्वतीय एवं तराई भाभर क्षेत्रों के समग्र विकास की दिशा में कृषि को नवीनतम तकनीकी विधाओं, वन सम्पदा संरक्षण, पशुधन–विकास आदि पर कार्य कर रही है।

13. हिमालयन पर्यावरण अध्ययन और संरक्षण संस्थान, हिस्कोः यह संस्था वर्ष 1979 से हिमालयी क्षेत्रों में पर्यावरण संरक्षण कृषि विकास, वन सम्पदा, औद्योनिकी तथा जैव सम्पदा सम्वर्द्धन पर कार्य कर रही है।

14. पहाड़ नैनीतालः कुमाऊॅ के इतिहासवेता पद्मश्री डॉ0 शेखर पाठक द्वारा स्थापित यह संस्था, समय–समय पर जनजागृति हेतु पद्यात्राओं का भी आयोजन करती है। पहाड़ द्वारा असकोट–अराकोट की सुप्रसिद्ध 1100 कि0 मी0 पदयात्रा का आयोजन 1974, 1954, 1994 तथा 2004 में किया जा चुका है।

15. उत्तरॉचल एसोसिएसन ऑफ नार्थ अमेरिकाः उत्तराखण्ड के प्रवासी प्रबुद्धजनों का यह संगठन प्रदेश के निर्धन साधनहीन, असहाय, बच्चों की शिक्षा से सम्बन्धित योजनाओं के संचालन में सक्रिय भूमिका का निर्वाह कर रहा है।

प्रदेश की अन्य स्वयंसेवी संस्थाएँ

जनसेवा संस्थान कठपुड़िया, अल्मोड़ा, ग्रामीण समाज कल्याण समिति, चीनारवाल, अल्मोड़ा, लक्ष्मी आश्रम कौसानी, अल्मोड़ा, अनुसूचित जाति आदर्श सेवा समिति, आरे, बागेश्वर, हिमालय जन कल्याण सेवा समिति, कपकोट, बागेश्वर, गोमती प्रयाग जन कल्याण परिषद्, भकुण्डा, चमोली, लोक विकास परिषद्, गौचर, चमोली, दशोली ग्राम स्वराजमण्डल गोपेश्वर, चमोली, ग्राम सेवा संस्थान, गोपेश्वर, चमोली, हिमालय वन्य जीव संस्थान, गोपेश्वर, चमोली, श्री नन्दा देवी महिला लोक विकास समिति, गोपेश्वर, चमोली, ओम जनसाख समिति, लोहाघाट, चम्पावत, पर्वतीय फलोधनान संस्थान, चम्पावत, अनुसूचित जाति महिला उद्यान समिति, देहरादून, सेन्टर फॉर हिमालियन रिसर्च इन्वेस्टिगेशन एण्ड सर्वे ऋषिकेश, कम्युनिटी रूरल हेल्थ प्रोग्राम, मसूरी, हिमालिन कन्जरवेशन सोसाइटी, मसूरी, जनाधार, इंदिरा नगर कालोनी, मसूरी, रूरल लिटिगेशन एण्ड इन्टाईटलूमेण्ट केन्द्र, देहरादून, सोसाइटी फॉर इंडियन फोरस्टरस, देहरादून, कृपाल शिक्षण संस्थान, रानीपुर मोडे, हरिद्वार, ग्रामीण विकास संस्थान, गोविन्द पुरी, हरिद्वार, लोक चेतना मंच रानीबाग, नैनीताल, चिराग शीतला, मुक्तेसर, नैनीताल, पहल, काठगोदाम नैनीताल, हिमालय सेवा समिति चन्दोक, पिथौरागढ़, पर्वतीय महिमा कल्याण समिति, डीडीहाट, पिथौरागढ़, महिला समृद्धि संस्था जखोली, रूद्रप्रयाग, कैलाश ग्राम्य विकास संस्थान, मयाली, रूद्रप्रयाग, सोसायटीज फॉर हिमालयन अग्रीकल्चर एण्ड डिवलपमेंट, अगस्त्यमुनि, रूद्रप्रयाग, सोसाइटीज फॉर हिमालयन जनकल्याण एवं बाल विकास समिति, रूद्रप्रयाग, जन पर्वतीय जनकल्याण परिषद्, रानी चौरी, टिहरी गढ़वाल, कृषक संसाधन विकास संस्थान, किच्छा उधमसिंहनगर, विकास एवं लोक प्रसार समिति, उत्तरकाशी, पीड़ित कल्याण एवं बालोत्थान समिति, कोट बंगला, उत्तरकाशी, पर्वतीय विकास संस्था डुंडा, उत्तरकाशी, गंगोत्तरी ग्राम स्वराज संघ, उजेली, उत्तरकाशी, तरूण पर्यावरण विज्ञान संस्थान, डुंडां, उत्तरकाशी आदि।

शासकीय संस्थाएँ

1. स्वशक्तिः प्रदेश शासन द्वारा वर्ष 2002 में प्रारम्भ की गई यह संस्था देहरादून स्थित उत्तराखण्ड महिला एवं बाल विकास समिति द्वारा संचालित है। इसके माध्यम से स्वयं सहायता समूहों के गठन द्वारा सामाजिक, सांस्कृतिक एवं आर्थिक दिशा में कार्य किया जाता है।

2. महिला सामाख्याः यह संस्था मानव संसाधन विकास मन्त्रालय, भारत सरकार द्वारा वित्त पोषित राष्ट्रीय कार्यक्रम का संचालन कर रहीं है, जिसका उद्देश्य महिला जागृति एवं सशक्तीकरण है।

3. स्वयांसिद्धाः यह संस्था सन् 2001 से प्रदेश के महिला सशक्तीकरण एवं बाल विकास विभाग द्वारा मानव संसाधन विकास मंन्त्रालय की वित्तीय सहायता से कार्यरत है। महिलाओं की आत्मनिर्भरता, कौशल सुधार, अधिकारों के प्रति चेतना तथा सम्पन्नता इस संस्था के मूल उद्देश्य है।

4. नेहरू युवा केन्द्रः यह स्वायतशासी राष्ट्रीय संस्था है जो मानव संसाधन विकास मन्त्रालय के युवा कार्य एवं खेल विभाग द्वारा ग्रामीण युवाओं के सर्वांगीण विकास की दिशा में कार्यरत है।

कुछ प्रमुख प्रतिष्ठित स्कूल/कालेज

श्री गुरू रामराय एजुकेशन मिशन, देहरादून– शिक्षा के क्षेत्र में राज्य में गुरू रामराय एजुकेशन मिशन का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। इस मिशन की स्थापना 1950 में श्री महन्त इन्दिरेश चरणदास जी ने की थी। सर्वप्रथम 1950 में देहरादून में एक विद्यालय गुरू रामराय विद्यालय खोला गया था। इसके बाद अनेक विद्यालय खोले गये। वर्तमान में इस मिशन में कुल 123 विद्यालय है, जिनमें से 80 उत्तराखण्ड में, 28 पंजाब में, 14 उ0 प्र0 में तथा एक दिल्ली में है।

दून कालेज – देहरादून में इस प्रतिष्ठित कालेज की स्थापना 1935 में प्रसिद्ध बैरिस्टर और वायसराय की काउंसिल के सदस्य सतीश रंजन दास द्वारा अच्छी शिक्षा और अंग्रेजी के विकास के लिए की गई थी। यह भारत का प्रथम पंजीकृत स्कूल है।

सेन्ट जोजफ एकेडमी – 1934 में देहरादून में स्थापित इस प्रतिष्ठित एकेडमी से भारत को अब तक कुल तीन नौसेनाध्यक्ष सुशील कुमार, विष्णुभागवत व विजय सिंह शेखावत मिल चुके हैं।

डी0 ए0 वी0 कालेज – देहरादून में डी0 ए0 वी0 कालेज की स्थापना 1902 में ठाकुर पूर्णसिंह नेगी ने एक संस्कृत विद्यालय के रूप में की थी। इस कॉलेज में उत्तराखण्ड के अनेक ख्याति प्राप्त लोगों ने शिक्षा अर्जित की । जैसे शिक्षाविद् भक्तदर्शन सांसद एवं केन्द्रीय मंत्री, हेमवतीनन्दन बहुगुणा, बी0 सी0 जोशी जनरल भारतीय थल सेना, यशवन्त सिंह रावत 1986 में पोलैण्ड में मैराथन दौड़ स्वर्ण पदक विजेता, नित्यानन्द स्वामी उत्तरांचल के प्रथम मुख्यमंत्री, बछेन्द्रीपाल माउंट एवरेस्ट पर चढ़ने वाली प्रथम भारतीय महिला, शिवसागर राम गुलाम, मॉरिशस के राष्ट्रपति, लोकेन्द्र बहादुर चन्द्र, नेपाल के पूर्व प्रधानमंत्री आदि।

सारणी 1 राज्य के कुछ अन्य प्रतिष्ठित स्कूल अधोलिखित हैं–

प्रतिष्ठित स्कूल / कालेज	स्थापना वर्ष
1. सेंट जार्ज कॉलेज, मसूरी, देहरादून	1853
2. वेलहेम गर्ल्स हाईस्कूल, देहरादून	1857
3. शेरवुड कॉलेज, नैनीताल	1879
4. लंढोर लैंग्वेज स्कूल, मसूरी	1870
5. वाइन वर्ग ऐलन स्कूल, मसूरी	1887
6. वुडस्टॉक स्कूल, मसूरी	1901
7. कॉन्वेण्ट ऑफ जीसस एण्ड मैरी, देहरादून	1902
8. महादेवी कन्या पाठशाला, देहरादून	1902
9. सेन्ट जोसेफ एकेडमी, देहरादून	1934
10. दून कालेज, देहरादून	1935
11. वेलहेम ब्वायज स्कूल, देहरादून	1937
12. बिड़ला विद्या मन्दिर, नैनीताल	1947

चिकित्सा शिक्षा

राज्य में चिकित्सकीय शिक्षा के विस्तार पर विशेष ध्यान दिया जा रहा है। वर्तमान में राज्य में एलोपैथिक, आयुर्वेदिक, होम्योपैथिक तथा नेचुरोपैथिक पद्धतियों में शिक्षा देने के लिए सरकारी एवं निजी क्षेत्र में कई संस्थाएं हैं। प्रमुख संस्थाएं अधोलिखित है–

1. एम्स– 1 फरवरी 2004 को केन्द्र सरकार ने ऋषिकेश में 1800 करोड़ रूपये की लागत से निर्मित होने वाले अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान एम्स का शिलान्यास किया। इस संस्थान के साथ ही गोपेश्वर में एक ट्रामा सेन्टर भी स्थापना की जा रही हैं। यह संस्थान दिल्ली के एम्स की एक शाखा होने के बजाय अपने आप में एक पूर्ण संस्थान है। इसमें 35 उच्चस्तरीय आधुनिक चिकित्सा सुविधाओं के अलावा 100 शैयाओं वाला मेडिकल कालेज भी होगा।

2. सुशीला तिवारी मेमो. चिकित्सालय– हल्द्वानी नैनीताल स्थित इस चिकित्सालय को राज्य सरकार ने मेडिकल कालेज का दर्जा प्रदान किया है। यह कालेज कुमाऊँ वि0 वि0 से सम्बद्ध है।

अद्यतन कदम –

1. राज्य सरकार अल्मोड़ा, रूद्रपुर ऊ0 सिं0 न0 और देहरादून में एक–एक मेडिकल कॉलेज बनाने की योजना बनाई है।
2. राज्य सरकार ने श्रीनगर में 500 करोड़ रूपये की लागत से हेल्थसिटी बनाने सम्बन्धी एक महत्वाकॉक्षी योजना तैयार की है। इस योजना के एक ही परिसर में डेंटल कॉलेज, नर्सिंग कॉलेज, आयुर्वेद कॉलेज और सिद्धा कॉलेज की स्थापना की जायेगी।
3. आयुर्वेद शिक्षा के लिए प्रत्येक जिले में एक–एक आयुष ग्राम बनाने की योजना है।

प्रमुख संस्थान/संगठन

लोक सेवा आयोग – प्रदेश में राज्य लोक सेवा आयोग का गठन अप्रैल 2001 में किया गया। इस आयोग के अध्यक्ष सहित कुल 4 सदस्य हैं। आयोग का मुख्यालय हरिद्वार में है। राजकीय विभागों के अतिरिक्त बेसिक, माध्यमिक एवं उच्च शिक्षा से सम्बन्धित चयन आयोग के अधिकार भी राज्य लोक सेवा आयोग को प्रदान किये गये है। आयोग का पहला अध्यक्ष एन0 पी0 नवानी को बनाया गया था, जो चार माह के अल्प कार्यकाल के पश्चात 14 अगस्त, 2001 को सेवानिवृत्त हो गए।

आर्यभट्ट प्रेक्षण विज्ञान शोध संस्थान (ऐरीज)– तारा तथा सौर भौतिकी में शोध के लिए उत्तर प्रदेश में सर्वप्रथम 1954 में राजकीय वेद्यशाला की स्थापना वाराणसी में की गई। सन् 1955 में इसे नैनीताल में शेर–का–डांडा पहाड़ी पर स्थानान्तरित कर दिया गया और 1961 में इसे नैनीताल के मनोरा पहाड़ी पर स्थापित किया गया। इस वेधशाला में तारकीय शोध के लिए चार दूरबीनें है जो क्रमशः 38 सेमी0 52 सेमी0 व 104 सेमी0 की डॉ0 सम्पूर्णानन्द दूरबीन हैं। इसके अतिरिक्त 25 सेमी. व 15 सेमी. व्यास की 2 अन्य दूरबीनें भी हैं जिनका उपयोग आकाशीय पिंडो की फोटोग्राफी एवं जनता को दिखाने में किया जाता है। इस वेद्यशाला का शोध कार्य राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय स्तर की मानक शोध पत्रिकाओं में प्रकाशित किया जाता है।

भारतीय पशु चिकित्सा एवं अनुसंधान संस्थान, मुक्तेश्वर – नैनीताल के मुक्तेश्वर नामक स्थान पर स्थित इस प्रयोगशाला को भारत में पशु चिकित्सा विज्ञान का मक्का कहा जाता है। सर्वप्रथम डॉ0 एल्फ्रेड लिंगार्ड के प्रयासों से 1893 में इसे इम्पीरियल वैक्टीरियोलोजिकल लैबोरेटरी के नाम से स्थापित किया गया था। 1925 में इसका नाम इम्पीरियल इंस्टीट्यूट ऑफ वेटरेनरी रिसर्च और स्वतंत्रता के बाद वर्तमान नाम रखा गया। इस संस्था के शुरूआती दिनों में डॉ. लिंगार्ड ने घोड़ो तथा गौ–पशुओं में होने वाले सर्रा रोग पर शोध किया। 19वीं शती के अंतिम वर्षों वक यह रिडरपेस्ट, एंथ्रेस्ट, सीरम, लिम्फैजाइटिस इपीजूटिक और ग्लैंडर्स रोगों पर उत्कृष्ट खोजें हुई। 1924 में डॉ. एडरवडर्स ने रिंडरपेस्ट नामक रोग का टीका खोजा था। वह इस संस्थान की अनूठी देन थी। इसी सेंटर ने मुर्गियों के रानीखेत नामक रोग के टीके का आविष्कार किया था, जिसके बिना मुर्गी पालन व्यवसाय सम्भव नहीं था।

भारतीय सर्वेक्षण विभाग– इसकी स्थापना सर्वप्रथम 1767 में बंगाल में भू–कर तथा अन्य सर्वेक्षण के लिए की गई थी। सन् 1942 में द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान इसे देहरादून में स्थानान्तरित किया गया। यह देश में प्रत्येक प्रकार के भू–सर्वेक्षण और मानचित्र बनाने वाला एकमात्र अभिकरण है। यहॉ कई प्रकार के सर्वेक्षण किये जाते है, यथा–वनस्पति सर्वेक्षण, प्राणि विज्ञान सर्वेक्षण, वन सर्वेक्षण, भू–गर्भ सर्वेक्षण और पुरातत्व सर्वेक्षण आदि। इन सर्वेक्षणों के अलग संस्थान होने पर भी मूल सर्वेक्षण भारतीय सर्वेक्षण विभाग द्वारा किये गये सर्वेक्षण और बनाए गए मानचित्रों पर ही आधारित होते हैं। इसके महासर्वेक्षक एवरेस्ट ने 1852 में विश्व की सबसे ऊॅची चोटी –एक्स वी का प्रेक्षण कर उसकी ऊॅचाई 29,002 फीट घाषित की थी। अतः उन्हीं के नाम पर उस चोटी का नाम एवरेस्ट गया। भारत का प्रथम डाक टिकट 1854 में इसी विभाग ने जारी किया था।

हिमालयन संग्रहालय उत्तरकाशी – नेहरू पर्वतारोहण संस्थान उत्तरकाशी के अन्तर्गत नवम्बर, 1965 को हिमालयन संग्रहालय की स्थापना की गई। संग्रहालय में देवी–देवताओं की मूर्तियां व अनुष्ठान करने वाले उपकरण रखे गए हैं। संग्रहालय में गढ़वाल के पारम्परिक आभूषण, पारम्परिक रसोई के बर्तन, रौंड, पेरड़ा, पाथा, तांभी व कुरही, वाद्य यन्त्र नगाड़ा, हुड़का, रणसिंगा, ढोल आदि राज्य में पाई जाने वाली वनस्पतियों तथा जन्तुओं मोनाल, हिमालयी भालू के साथ ही यहॉ हिमालयी तितलियों का संग्रह भी किया गया है। संग्रहालय में पर्वतारोहण तकनीक व उपकरणों को भी संजोकर रखा गया है।

भाषा संस्थान एवं हिन्दी अकादमी– राज्य में उत्तराखण्ड भाषा संस्थान और उत्तराखण्ड हिन्दी अकादमी की स्थापना 2009 में की गई। हिन्दी एवं अन्य भाषाओं का प्रचार–प्रसार, शोध, अनुवाद, साहित्य संग्रह, सरकारी गजटों का अनुवाद आदि कार्य इन संस्थाओं द्वारा किये जाते हैं।

उपसंहार–

हिमालय का यह भूभाग प्राचीनकाल से ही आश्रम पद्धति में शिक्षा के लिए प्रसिद्ध रहा है। यहॉ के मंदिरों, आश्रमों तथा गुफाश्रयों में शिक्षा ग्रहण करने के लिए दूर–दूर से विद्यार्थी आते रहे है। बद्रिकाश्रम और कण्वाश्रम शिक्षा के दो महान केन्द्र थे। महाकवि कालिदास एवं चक्रवर्ती सम्राट भरत(इन्ही के नाम पर अपने देश का नाम भारत पड़ा) कण्वाश्रम से संबंधित थे। वर्तमान में भी हरिद्वार, ऋषिकेश, जोशीमठ, रानीखेत, देवप्रयाग आदि नगरों आश्रम पद्धति से शिक्षा दी जाती है। यद्यपि आधुनिक शिक्षा और शिक्षण संस्थाओं की स्थापना का क्रम अंग्रेजी शासनकाल में 19वीं शताब्दी के मध्य से शुरू हुआ । लेकिन राज्य गठन के पूर्व तक यहॉ विद्यालयी एवं रोजगारपरक तथा उच्च अपर्याप्त और कामचलाऊ थी। उच्च शिक्षा के प्रशासन के लिए हल्द्वानी (नैनीताल) में उच्च शिक्षा निदेशालय की स्थापना की गई हैं। प्राविधिक शिक्षा के लिए श्रीनगर (पौड़ीगढ़वाल) में प्राविधिक शिक्षा निदेशालय की और इस निदेशालय के अधीन रूड़की (हरिद्वार) में उत्तराखण्ड प्राविधिक शिक्षा एवं परीक्षा परिषद की स्थापना की गई है। संस्कृत शिक्षा के लिए अलग से विभाग बनाया गया है। शिक्षकों के प्रशिक्षण हेतु देहरादून में माइक्रोशॉफ्ट अकादमी की स्थापना की गई है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. आर० ए० शर्मा (2011)। *शिक्षा के दार्शनिक एवं सामाजिक मूल आधार*। मेरठः आर० लाल बुक डिपो।
2. कपिल, एच०के० & सिंह, ममता (2013)। *सांख्यिकी के मूल तत्व*। आगराः अग्रवाल पब्लिकेशन्स।
3. कौल, लोकेश (2012)। *शैक्षिक अनुसंधान की कार्य प्रणाली*। नोएडाः विकास पब्लिशिंग हाउस प्राइवेट लिमिटेड।
4. गुप्ता, एस० (2005)। *एजुकेशन इन इमर्जिंग इण्डियॉ, टीचर्स रोल इन सोशाइटी*। दिल्लीः शिप्रा पब्लिकेशन्स।
5. गेरैट, एच०ई० (2000)। *शिक्षा और मनोविज्ञान में सांख्यिकी के प्रयोग*। लुधियानाः कल्याणी पब्लिशर्स।
6. नवानी, एल० & रावत, के० एस० (2012)। *उत्तराखण्ड इयर बुक*। देहरादूनः बिनसर पब्लिकेशन।
7. बैस्ट, जे० डब्ल्यू० (2011)। *रिसर्च इन एजुकेशन* । नई दिल्लीः पी०एच०आई० लर्निंग प्राइवेट लिमिटेड।
8. राय, पी० & राय, सी० पी० (2012)। *अनुसंधान परिचय* । आगराः लक्ष्मी नारायण अग्रवाल।
9. त्रिपाठी, के० न० & कुमार,आ०(2012)। *उत्तराखण्ड सामान्य अध्ययन* / इलाहाबादः बौद्विक प्रकाशन।

वेबसाइट

www.google.com
www.sodhganga.inflibnet.ac.in

देवेन्द्र सिंह चम्याल
एम० एस–सी० रसायन विज्ञान, एम० ए० गणित, एम० ए० इतिहास, एम० एड० (गोल्ड मैडलिस्ट), नेट (शिक्षाशास्त्र), शोध छात्र, शिक्षा संकाय, एस० एस० जे० परिसर, अल्मोड़ा, कुमाऊँ वि० वि० नैनीताल।